11–6–67 ओमशांति प्रातःक्लास

रिकार्ड– आखिर वो दिन आया आज.....

बच्चों ने गीत सुना। आखिर विश्व पर शांति का समय आया। सब कहते हैं कि विश्व पर शांति कैसे हो?फिर जो ठीक राय देते हैं उनको इनाम देते हैं। नेहरू भी राय देते थे। शांति तो हुई नहीं। सिर्फ राय ही देकर गये। अब तुम बच्चों की बुद्धि में है कि किसी समय सृष्टि में सुख–शांति ,पवित्रता सब थी। वो अभी नहीं है। अब फिर होने वाली है। चक्र तो फिरेगा ना। यह तो संगमयुगी ब्राह्मणों की बुद्धि में है। कलियुगी मनुष्यों की बुद्धि में नहीं है। उन सबकी बुद्धि में है लोहा और तांबा। तुम्हारी बुद्धि में है सोना। तुम जानते हो कि भारत फिर से सोने का बनना है। भारत को ही गोल्डन बर्ड कहा जाता था। भले महिमा तो करते हैं ;परंतु सिर्फ कहने मात्र। तुम तो अभी प्रैक्टिकली पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो कि बाकी थोड़े रोज हैं कि सारी नर्क की बातें भूल जावेंगे। दुःख की बातें भूल जावेंगी। तुम्हारी बुद्धि में अब सुख के दिन सामने खड़े हैं। जैसे आगे विलायत से आते थे तो समझते थे कि अब बाकी थोड़ा समय है पहुंचने में ;क्योंकि आगे तो विलायत से आने में बहुत समय लगता था। अब तो एरोप्लेन में जल्दी पहुंच जाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि और तुम्हारी बुद्धि में है कि अब हमारे सुख के दिन आते हैं जिसके लिए ही हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। बाबा ने पुरुषार्थ भी बहुत सहज बताया है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक। यह तो सर्टन है कि तुम देवता थे। देवताओं के कितने ढेर के ढेर मंदिर बन रहे हैं। बच्चे जानते हैं कि मंदिर आदि फिर टूट जाते हैं। बनाते ही जावेंगे जब तक कि यह पता पड़े कि यह महाभारत की लड़ाई है। यह मंदिर आदि सब टूट जावेंगे। यह जब समझेंगे तब बनाना बंद करेंगे। अभी तो तुम्हारे सिवाय कोई को भी पता नहीं है। तुम जानते हो कि यह मंदिर आदि बनाकर क्या करेंगे?..... तुम बच्चे नालेज ले रहे हो। सो उसकी अथॉरिटी हो। कहा भी जाता है परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान ऑलमाइटी अथॉरिटी (बाप) है। तुम ज्ञान की अथॉरिटी हो। वो हैं भक्ति की अथॉरिटी। ज्ञान की अथॉरिटी बाप को कहा जाता है कि ऑलमाइटी अथॉरिटी। तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बन रहे हो। तुमको सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है। जानते हो कि हम पुरुषार्थ कर रहे हैं बाप से वर्सा पाने। वो भक्ति की अथॉरिटी हैं तो सबको भक्ति ही सुनाते हैं। तुम ज्ञान की अथॉरिटी हो तो ज्ञान ही सुनाना है। अब भक्ति मुर्दाबाद ,ज्ञान जिन्दाबाद हो रहा है। यह अक्षर तुम निश्चय से कह सकते हो। सतयुग में भक्ति होती नहीं है। पुजारी एक भी होते नहीं हैं। पूज्य ही पूज्य हैं। आधा कल्प हैं पूज्य। आधा कल्प हैं पुजारी। भारतवासियों के लिए ही है। पूज्य थे तो स्वर्ग था। अब भारत पुजारी नर्क है। तुम बच्चे अब प्रैक्टिकल लाइफ बना रहे हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी को समझाते रहते हो और वृद्धि को पाते रहते हो। ड्रामा में पहले से ही नूंध थी। ड्रामा ही तुमको कराते रहते हैं। तुम करते रहते हो। जानते हो कि ड्रामा में हमारा अविनाशी पार्ट है। दुनियां इन बातों को क्या जाने। हमारा ही ड्रामा में पार्ट है। जो कहेंगे वो ही समझेंगे कि कैसे हमारा इस ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी तुम्हारे सिवा कोई को पता नहीं है। उंच ते उंच कौन है दुनियां में कोई नहीं जानते हैं। ऋषि–मुनि आदि भी कहते थे कि हम नहीं जानते हैं। नेति2 कहते .....। अब तुम बच्चे तो जानते ही हो। वो रचता बाप है और हमको पढ़ा रहे हैं। वो तो सिर्फ पूछते हैं कि तुम रचता को जानते हो?तो कह देते हैं नेति2 । तुमको तो फिर पढ़ा रहे हैं। यह भी बाबा ने बार2 समझाया है कि यहां पर जब भी बैठते हो तो देहीअभिमानी बनकर बैठो। एक बाप ही राजयोग सिखाते हैं कि वो हमारे अंदर की जानते हैं। बाप कहते हैं कि मैं कोई थॉट रीडर नहीं हूँ। इतनी बड़ी दुनियां है। किसको2 बैठकर रीड करुंगा?मैं तो आता हूँ पावन बनाने। ड्रामा में जो मेरा पार्ट है वो ही बजाता हूँ। बाकी मैं कोई रीड आदि नहीं करता हूँ। बताता हूँ कि मेरा क्या पार्ट है और तुम्हारा क्या

पार्ट है और क्या बजा रहे हो। तुम यह नालेज सीखकर और सिखाते हो। मेरा तो पार्ट ही है पतितों को पावन बनाना। यह भी तुम ही जानते हो। तुम तो तिथी,तारीख आदि सब कुछ जानते हो। दुनियां में कोई थोड़े ही जानते हैं। तुमको बाप सिखा रहे हैं। फिर जब यह चक्र पूरा करेंगे फिर बाप आवेंगे। इस समय जो सीन चल रहा है वो फिर कल्प बाद चलेगा। एक सेकेंड नहीं मिले दूसरे से। यह नाटक फिरता ही रहता है। तुम बच्चों को बेहद के नाटक का पता है। फिर भी तुम बार2 भूल जाते हो। बाप कहते हैं कि तुम सिर्फ याद करो कि हमारा बाबा2 है। वो ही टीचर भी है। (गुरू) है। तुम्हारी बुद्धि उस तरफ चली जानी चाहिए। आत्मा खुश होती है बाप की महिमा सुनकर। सब कहते हैं हमारा बाबा2 है ,टीचर है। वो पतित–पावन सतगुरू है। वो सच्चा ही सच्चा है। पढ़ाई भी सच्ची और पूरी है। उन मनुष्यों की पढ़ाई तो अधूरी है। तो तुम बच्चों की बुद्धि में कितनी खुशी होनी चाहिए। बड़ी परीक्षा पास करने वालों की बुद्धि में जास्ती खुशी रहती है। तुम कितना उंचा पढ़ते हो। तो कितनी कापारी खुशी होनी चाहिए। भगवान बाबा बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं। तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। यह वो ही एपीसोड रिपीट हो रहा है। सिवाय तुम्हारे किसी को भी पता नहीं है। कल्प की ही आयु बढ़ा दी है। तुम्हारी बुद्धि में अब सारी 5000वर्ष की स्टोरी चक्र खाती रहती है। जिसको ही स्वदर्शनचक्रधारी कहा जाता है। सिर्फ बच्चे कहते हैं कि बाबा तूफान बहुत आते हैं। हम भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं कि तुम किनको भूल जाते हो?बाप जो तुमको डबल सिरताज विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम कैसे भूलते हो?दूसरे किसी को नहीं भूलते हैं। स्त्री,बाल–बच्चे,काका,चाचा आदि सभी याद हैं। बाकी इसी बाप को भूल जाते हो। तुम्हारी युद्ध इस याद में है। जितना भी हो सके याद करना है। यहां पर आकर बैठने की भी आदत नहीं डालनी है। आज सुना कि बच्चे सवेरे उठकर यहां हाल में आकर बैठे थे। बाबा अगर होते तो उपर छत पर वा बाहर की ठंडी2 हवा में चले जाते।यहां ही आकर बैठने की कोई जरूरी नहीं है। बाहर भी जा सकते हो। सवेरे के समय कोई डर आदि की भी बात नहीं रहती है। बाहर में जाकर पैदल भी करो। आपस में यही बातें करते रहो कि देखते हैं कि बाबा को कौन जास्ती याद करता है। फिर बताना चाहिए कि कितना समय हमने याद किया। बाकी समय हमारी बुद्धि कहां गई। इसको ही कहते हैं एक/दो को उंचा उठानां नोट करो कि कितना समय बाप को याद किया। बाबा की जो प्रैक्टिस है वो बताते हैं। याद में तुम एक घंटा पैदल करो तो तुम थकेंगे नहीं। याद से तुम्हारे कितने पाप कट जावेंगे। चक्र को तो तुम जानते हो। रात–दिन तुम्हारी बुद्धि में है कि अब हम घर जावेंगे। पुरुषार्थ करते है। कलियुगी मनुष्यों को तो जरा भी पता नहीं है। मुक्ति के लिए कितनी भक्ति करते रहते हैं। कोई किनको जपेंगे ,कोई किसको। अनेकों मत हैं। तुम ब्राह्मणों की है ही एक मत। जो ब्राह्मण बनते हैं उन सबकी है श्रीमत। तुम बाप की श्रीमत से देवता बनते हो। देवताओं की कोई श्रीमत नहीं है। श्रीमत अभी ही तुम बाह्मणों को मिलती है। भगवान है ही निराकार। कृष्ण का नाम डालने से ही इस बड़ी भूल से कितनी खराब अवस्था हो गई है। वो है गीता पढ़ते2 नीचे उतरते। अब वो ही गीता सम्मुख बैठकर बाप सुनाकर राजयोग सिखा रहे हें। जिससे ही तुम अपना राजभाग लेकर कितने उंच विश्व का मालिक बनते हो। भक्तिमार्ग के शास्त्र कितने ढेर के ढेर हैं ;परंतु काम का शास्त्र तो एक गीता ही है। भगवान आकर राजयोग सिखा रहे हैं। उसको ही गीता कहा जाता है। अब तुम बाप से पढ़ते हो। जिनसे ही स्वर्ग का राज्य पाते हो। फिर जिसने पढ़ा उसने लियां ड्रामा में पार्ट है नां जो यहां आते जावेंगे उनका गीता ,रामायण आदि पढ़ना सब बंद हो जावेगा। तुम समझते हो कि वो सब है भक्ति। अब ज्ञान सुनाने वाला ज्ञान सागर एक ही बाप है। वो ड्रामा प्लानअनुसार कलियुग के अंत और सतयुग की आदि के संगम पर आते हैं। कोई भी बात में मूंझो नहीं तुम बच्चे ही जानते हो कि बाप इसमें आकर पढ़ाते हैं। और कोई यह पढ़ा नहीं सकते। .....

इन सबका भी उद्धार मुझे ही करना है। गीता में तो सिर्फ लिखा है कि इन साधुओं आदि का उद्धार करने मैं आता हूँ। इसका अर्थ कब कोई को बतावेंगे नही। अर्थ तो बहुत क्लीयर है। साधु आदि सबका मैं उद्धार करता हूँ। साधु समाज भी है ना। वास्तव में तो साधुओं का प्रेजीडेंट भी साधु सन्यासी ही होना चाहिए ;परंतु अभी तो देखो उनका प्रेजीडेंट बना है वाधु (नन्दा) वो साधु वो फिर वाधु। यह भी ड्रामा में नूंध है। हम कोई से नफरत नहीं करते हैं। यह तो समझा जाता है। भगवानोवाच्य कि यह आसुरी सम्प्रदाय है। तुमको भी कहते हैं कि तुम बड़े एप्स थे नां विद्वान आदि भी आते हैं। यह दादा भी तो (कथायें) आदि पढ़ते थे ना। अब तुम बच्चों की एक ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। यह है ही नर से नारायण बनने की सत्य कथा। इनकी ही फिर भक्ति मार्ग में महिमा चलती है। भक्तिमार्ग की रस्म चलती आती है। अभी तो यह रावणराज्य पूरा होना है। तुम अभी .....आदि में थोड़े ही जावेंगे। तुम तो समझावेंगे कि अब यह क्या करते हैं?यह तो बेबीज का काम है। बड़े2 आदमी देखने जाते हैं कि रावण को कैसे जलाते हैं। यह है कौन?कोई बता नहीं सकते। रावणराज्य है ना। रामराज्य भी यहां रावणराज्य भी यहां होता है। मनुष्यों की बुद्धि सारी मारी हुई है। राजाओं के पास पैसे तो बहुत रहते हैं। दशहरे आदि में कितनी खुशी मनाते हैं। जब से रावण को जलाते आते हैं दुःख भी चला आता है। कुछ भी समझ नहीं। अब तो समझते हो कि हम भी कितने बेसमझ हैं। रावण बेसमझ बना देते हैं। अभी तुम कहते हो बाबा हम तो ल.ना. जरूर बनेंगे। हम कोई कम पुरुषार्थ थोड़े ही करेंगे। यही एक स्कूल है। पढ़ाई बहुत सहज है। बूढ़ी2 मातायें और कुछ नहीं याद कर सकती हैं तो बाप को याद करें। मुख से हाय राम तो कहती हो ना। बाबा भी बहुत सहज बताते हैं। तुम आत्मा हो परमात्मा बाप को याद करो। तुम्हारा बेड़ा पार हो जावेगा। कहाँ चले जावेंगे?शांतिधाम , सुखधाम। और सब कुछ भूल जाओ। जो सब कुछ पढ़ा है वो सब कुछ भूल जाओ। बाप को याद करो तो बाप से वर्सा जरूर मिलेगा। बाप ही की याद से ही पाप कट जाते हैं।कितना सहज है। कहते भी हैं भृकुटि के बीच चमकता सितारा। तो जरूर इतनी छोटी आत्म होगी। डाक्टर्स लोग बहुत कोशिश करते हैं आत्मा को पकड़ने की ;परंतु वो तो बहुत सूक्ष्म है। देख,पकड़ नहीं सकते हैं। बाप भी वैसा ही बिंदी है। कहते हैं कि जैसे तुम साधारण हो तो मैं भी साधारण टीचर होकर तुमको पढ़ाता हूँ। किसको क्या पता कि इनको भगवान कैसे पढ़ाते होंगे। कृष्ण पढ़ाते हो तो अमरीका ,जापान सारी तरफ से इण्डिया में आ जावे। इतनी तो कशिश है। कृष्ण के साथ प्यार तो सबका है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम सो बन रहे हैं। कृष्ण है प्रिंस। प्रिंस तो सबको ही बनना है। कृष्ण को गोद में लेना चाहते हो तो पुरुषार्थ करना पड़े। कोई बड़ी बात नहीं है। स्वर्ग के प्रिंस तो सब विश्व के मालिक हैं। अभी इसलिए ही बाप पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं दुनियां की अब सब बातें छोड़ो। ऐसे कब नहीं समझो कि हमारे पास तो करोड़ है। लाख है। कुछ भी हाथ....नहीं आवेगा। इसलिए अच्छी रीति पुरुषार्थ करो। बाप के पास आते हैं तो बाप उलहना देते हैं कि .....मास से आते हो और बाप जिससे ही स्वर्ग की बादशाही मिलती है उनसे इतना समय तक मिले भी नहीं हो?कहते हैं बाबा फलाना काम था और अगर तुम मर जाते फिर यहां कैसे आते?यहां बहाना थोड़े ही चल सकेगा। बाप राजयोग सिखा रहे हैं और तुम सीखते नहीं हो। जिसने बहुत भक्ति की है उसको सात दिन में तो क्या एक सेकेंड में तीर लग सकता है। सेकेंड में विश्व का मालिक बन सकते हैं। यह खुद बैठे हैं ना। विनाश दिखाया और चतुर्भुज का रूप दिखाया। बस। समझ लगी कि आहो! हम विश्व के मालिक बनते हैं?थूक डालो उस धंधे आदि को। यह तो कोई काम का नहीं है। सा. हुआ और झट छोड़ दिया।यहां तुम बच्चों का .....है कि बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने। बाप पूछते हैं कि निश्चय आपको कब हुआ?तो कहते हैं आठ मास हुआ। अरे वाह! विश्व की बादशाही देने वाले से आठ मास तक मिलने नहीं आये हैं। वंडर है ना। विदाई।